शिवमहिम्नःस्तोत्र का साधनोपयोगी परिचय

आगम-ग्रन्थों में स्तोत्र को उपासना का एक प्रमुख अङ्ग बतलाकर साधनोपयोगी पाँच अङ्गों में जिह्वारूप कहा है। **'स्तोत्रं देवीरसा प्रोक्ता'**-स्तोत्र भगवती वाग्देवी की जिह्वा है। समस्त वाङ्मय की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती वाणी के रूप में आविर्भूत होकर इष्टदेव की स्तुति करती है।

कालिदासने कहा है कि-**'स्तोत्रं कस्य न तुष्टये?'**-स्तोत्र किसे अच्छा नहीं लगता, किसे संतुष्ट नहीं करता? 'स्तोत्र' शब्द स्वयं प्रशंसा का ही तो पर्याय है। महर्षि पाणिनिने 'ष्टुञ्' धातु को इसी अर्थ में समाविष्ट बताकर उसका अर्थ स्तुति करना किया है।

आदिदेव महादेव परम दयालु, आशुतोष हैं। सीधी-सादी भक्ति से प्रसन्न होनवाले सर्वमङ्गलकारी भगवान् शिव की आराधना-उपासना चिरकाल से देव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, मानव आदि सभी करते आये हैं। वेदों में शिव की महिमा का वर्णन अत्यन्त उत्कृष्टता से हुआ है और वेदोपदिष्ट मार्ग का ही अनुसरण करते हुए विद्वान् साधकों ने शिव की महिमा को लौकिक संस्कृत भाषा के आश्रय से स्तोत्रों द्वारा पल्लवित किया है।

समस्त वेद तथा वेदान्त का सार एवं परमतत्त्व शिव ही हैं। इसीलिये 'आश्वलायन-सूत्र' में तथा 'रुद्राध्याय' आदि में सभी वस्तुओं को शिव का सद्भाव कहा है। एक महेश्वर ही अखिल मूर्तियों में उपास्य हैं-**'प्रतिपाद्यो महादेवः स्थितः सर्वासु मूर्तिषु'** (स्कन्दपुराण) के अनुसार समस्त मूर्तियों में प्रतिपाद्य महादेव ही हैं। शिव की महिमा अगम्य, अनन्त तथा अवर्णनीय है।

ब्रह्मा, विष्णु, ऋषि और मुनि आदि कोई भी उन भगवान् शिव के बल एवं वीर्य की महिमा को नहीं जानते। ऐसे अपार महिमामय भगवान् शिव की महिमा का वर्णन उनके अनन्य सेवक गन्धर्वराज श्रीपुष्पदन्तने स्व-महिमा से भ्रष्ट होने पर पुनः अपनी उस महिमा-प्राप्ति के लिये किया था। वह स्तोत्र गङ्गाधर शिव की प्रीति के लिये 'शिखरिणी' छन्द में गाया गया। शिखरिणी-छन्द गङ्गा के समान ही शिवजी को परम प्रिय है, इस रहस्य का ज्ञान श्रीपुष्पदन्त ने उनकी सेवा में रहते हुए प्राप्त किया था, अतः उसी को आधार बनाकर अपनी वाणी को पावन करते हुए प्रार्थना-स्तोत्र की रचना की। स्तोत्र का प्रारम्भ **'महिम्नः'** पद से होने के कारण सद्यःस्मृति के लिये उसे **'महिम्नःस्तोत्र'** की संज्ञा दी गयी।

महिम्नःस्तोत्र के आविर्भावक 'शिव'

यद्यपि यह सुप्रसिद्ध है कि 'महिम्नःस्तोत्र' की रचना पुष्पदन्त नामक गन्धर्वराज ने अपनी महिमा की पुनः प्राप्ति के लिये की। तथापि ऐसे बहुत से प्रमाण मिलते हैं कि इसे स्वयं भगवान् शिव ने अपने 'भृङ्गी' नामक गण के बत्तीसों दाँतों पर बत्तीस पद्यों में अङ्कित दिखलाया था। उसका कारण भी यह था कि पुष्पदन्ताचार्य की इस स्तुति से भगवान् शिव ने प्रसन्न होकर उन्हें विलुप्त शक्ति की पुनरुपलब्धि का वरदान दिया था। उससे उनके मन में अभिमान जग गया। उसे अन्तःसाक्षी

शिव ने भृङ्गी को निमित्त बनाकर दूर किया और इसे पुष्पदन्त भी समझ गये कि मेरे और सभी भक्तों के उद्धार-हेतु भगवान् ने मुझे निमित्त बनाकर इस स्तोत्र को प्रकट किया है। अतएव काश्मीरी शैवग्रन्थों में इसे 'सिद्धस्तोत्र' की संज्ञा दी गयी है तथा भगवान् की मङ्गलमयी भक्ति और उनके सगुण-निर्गुण स्वरूप के साक्षात्कार का साधन भी माना गया है।

भगवान् शिव समस्त आगमों के प्रवक्ता हैं, उनके द्वारा प्रकाशित आगमिक साहित्य में स्तोत्र को भी आवश्यक अङ्ग माना गया है तथा निर्वाण-तन्त्र के अनुसार **'कलावागमसम्मतः'** के आदेशानुसार जो साधना-साहित्य वेद-पुराणादि से प्राप्त हो उसे भी कलियुग में आगमानुरूप बनाकर साधना करने से शीघ्र लाभ होता है। वैदिक गायत्री-मन्त्र को भी इसीलिये आगमिक पद्धति से पूर्वाङ्ग और उत्तराङ्ग मन्त्रों के बीच मूल गायत्री-मन्त्र को (आगमिक रूप में) जपने का विधान है, जो पूर्ण लाभकारी है।

महिम्नःस्तोत्र की आगमिकता के लिये तन्त्रों में यत्र-तत्र निर्देश प्राप्त होते हैं, जिनमें विनियोग, ऋष्यादिन्यास, कर-हृदयादिन्यास, ध्यान, मुद्रा और पूजा-विधान के साथ ही काम्य प्रयोग भी वर्णित हैं। उनमें से कुछ अंश इस प्रकार हैं-

विनियोग-ॐ अस्य श्रीशिवमहिम्नःस्तोत्रस्य श्रीपुष्पदन्त ऋषिः, शिखरिण्या-दिच्छन्दांसि, श्रीमदाशुतोषशिवो देवता, हौं बीजम्, जूं शक्तिः, सः कीलकं मम श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थे (अमुकफलप्राप्तये*) पाठे*, अभिषेके* विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास-श्रीपुष्पदन्तर्षये नमः (शिरसि), शिखरिण्यादिच्छदोभ्यो नमः (मुखे), श्रीमदाशुतोषशिवदेवतायै नमः (हृदये), हौं बीजाय नमः (गुह्ये), जूं शक्तये नमः (पादयोः), सः कीलकाय नमः (नाभौ), विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)।

स्तोत्रश्लोक सं.	*कर-हृदयादि-न्यास*	*पहली बार*	*दूसरी बार*
28	भवः शर्वो रुद्रः॰(पूरा श्लोक)	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
29	नमो नेदिष्ठाय॰(पूरा श्लोक)	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
30	बहु लरजसे॰(पूरा श्लोक)	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
25	मनः प्रत्यक्चित्ते॰(पूरा श्लोक)	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
24	श्मशानेष्वाक्रीडा॰(पूरा श्लोक)	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
19	हरिस्ते साहस्रं॰(पूरा श्लोक)	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

ध्यानम्-

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।

---

* विनियोग वाक्य में जिस फल की प्राप्ति का उद्देश्य हो उसे बोलना चाहिये। इसी प्रकार स्तोत्र का पाठ करना है या उसके द्वारा अभिषेक करना है, इसका भी स्पष्ट उल्लेख विनियोग-वाक्य में संकेतानुसार करना चाहिये।

पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

इसके पश्चात् आगे बताये गये श्लोकों को पूरा बोले और उनके पहले '**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः**' ये प्रणवयुक्त बीज लगाकर शिवजी की विशेष पूजा करनी चाहिये। यथा–

(श्लोक संख्या 26)	**त्वमर्कस्त्वं सोमः।** पूरा श्लोक		**पादयोः पाद्यं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 7)	**त्रयी सारव्यं योगः।**	"	**हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 28)	**भवः शर्वो रुद्रः।**	"	**आचमनीयं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 29)	**नमो नेदिष्ठाय।**	"	**जलस्नानं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 30)	**बहुलरजसे।**	"	**दुग्धस्नानं समर्पयामि।**
(बीजमन्त्र)	**ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः**	–	**शुद्धजलस्नानं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 25)	**मनः प्रत्यक्चित्ते।**	"	**दधिस्नानं समर्पयामि।**
(बीजमन्त्र)	**ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः**	–	**शुद्धजलस्नानं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 24)	**श्मशानेष्वाक्रीडा।**	"	**घृतस्नानं समर्पयामि।**
(बीजमन्त्र)	**ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः**	–	**शुद्धजलस्नानं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 23)	**स्वलावण्याशंसा।**	"	**मधुस्नानं समर्पयामि।**
(बीजमन्त्र)	**ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः**	–	**शुद्धजलस्नानं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 22)	**प्रजानाथं नाथः।**	"	**शर्करास्नानं समर्पयामि।**
(बीजमन्त्र)	**ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः**	–	**शुद्धजलस्नानं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 17)	**वियद्व्यापी तारा।**	"	**पुनः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 20)	**क्रतौ सुप्ते जाग्रत्।**	"	**वस्त्रं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 18)	**रथः क्षोणी यन्ता।**	"	**यज्ञोपवीतं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 21)	**क्रियादक्षो दक्षः।**	"	**पुनर्वस्त्रं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 13)	**यदृद्धिं सुत्राम्णो।**	"	**गन्धं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 14)	**अकाण्डब्रह्माण्ड।**	"	**अक्षतान् समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 15)	**असिद्धार्था नैव।**	"	**भस्म समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 19)	**हरिस्ते साहस्रं।**	"	**पुष्पाणि समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 11)	**अयत्नादापाद्य।**	"	**बिल्वपत्राणि समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 10)	**तवैश्वर्यं यत्नाद्।**	"	**परिमलद्रव्यं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 4)	**तवैश्वर्यं यत्तत्।**	"	**सुगन्धिद्रव्यं** (इत्र) **समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 10)	**तवैश्वर्यं यत्नाद्।**	"	**धूपं समर्पयामि।**

(श्लोक संख्या 12)	**अमुष्य त्वत्सेवा॰**	पूरा श्लोक	**दीपं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 16)	**मही पादाघाताद्॰**	”	**नैवेद्यं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 29)	**नमो नेदिष्ठाय॰**	”	**नीराजनं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 31)	**कृशपरिणति चेतः॰**	”	**पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 32)	**असितगिरिसमं॰**	”	**क्षमाप्रार्थनां समर्पयामि।**
(श्लोक संख्या 26)	**त्वमर्कस्त्वं सोमः॰**	”	**प्रदक्षिणां समर्पयामि।**

इसके पश्चात् भक्तिपूर्वक 'महिम्नःस्तोत्र' का पाठ करे और उत्तरपूजा करके पाठ-समर्पण तथा क्षमा-प्रार्थना करके **'श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु'** कहकर जल छोड़े।

कामनापूरक प्रयोग – जिस प्रकार 'दुर्गासप्तशती' के किसी एक मन्त्र का स्वतन्त्र रूप से बीज मन्त्र लगाकर जप करने से कार्य-सिद्धि होती है, उसी प्रकार महिम्नःस्तोत्र के श्लोकों के प्रयोग करने का भी विधान मिलता है। यथा-

सर्वकामना – पूर्ति के लिये – 'ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः' इन बीज मन्त्रों का प्रत्येक श्लोक के साथ लोम-विलोम पाठ करने से सिद्धि होती है।

पुत्रप्राप्ति – प्रयोग – नारी निराहार (प्रातःकाल कुछ भी नहीं लेकर) स्नानादि करके पति के साथ प्रतिदिन गेहूँ के आटे के 11 पार्थिवेश्वर बनाये और उनकी ऊपर बताये-अनुसार 'महिम्नःस्तोत्र' के श्लोकों से पार्थिव-पूजा करके 11 पाठ से अभिषेक करे। तदनन्तर अभिषेक-जल ग्रहण करे और पुत्र-प्राप्ति के लिये प्रार्थना करे। यह प्रयोग 21 अथवा 41 दिनतक करे।

शिवमहिम्नःस्तोत्र के कामनापूरक अन्य अनेकों प्रयोग मिलते हैं। जैसे दाम्पत्य सुख के लिये, संतति सुख के लिये, समृद्धिप्राप्ति के लिये, मानसिक पीड़ा-निवारण के लिये, विजय के लिये, सम्मानप्राप्ति के लिये तथा विद्याप्राप्ति के लिये। यहाँ पर एक-दो प्रयोग ही लिखे गये हैं।

बिना किसी कामना के भगवत्प्रीत्यर्थ इन प्रयोगों के अनुष्ठान की महिमा अमित है। निष्कामभाव से किये गये अनुष्ठान में त्रुटि होने पर प्रत्यवाय भी नहीं लगता तथा उसका फल भी अनन्त है।

(यह लेख गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित 'शिवोपासनांक' पर आधारित है।)

❀❀❀❀❀❀

अपमानित पुरुष को चाहिये कि वह कभी अपमान करनेवाले की बुराई न सोचे। अपने धर्म पर दृष्टि रखते हुए भी दूसरों के धर्म की निन्दा न करे।

अपमानितस्तु न ध्यायेत्तस्य पापं कदाचन।
स्वधर्ममपि चावेक्ष्य परधर्मं न दूषयेत्।। (पद्ममहापु. सृष्टिखण्ड 19/12)